उन्होंने- वीर रस, रौद्र रस, वीभत्स रस तथा मुख्य रूप से श्रृंगार रस का सफल प्रयोग किया है। अलंकारों में मुख्यतः अनुप्रास अलंकार के साथ-साथ - उपमा, उत्प्रेक्षा, मानवीकरण, रूपक, पुनरुक्ति, आदि अलंकारों का स्वाभाविक ढंग से प्रयोग किया है।

निष्कर्ष:- निष्कर्ष रूप में यही कहा जा सकता है कि सुमित्रा नंदन पंत एक सुप्रतिष्ठित तथा सुलझे हुए कवि थे। वे जीवनभर साहित्य साधना में लगे रहे और हिन्दी साहित्य के विकास में उन्होंने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने साहित्य के मुख्यतः दोनों रूपों गद्य तथा पद्य में समान रूप से लेखनी चलाई। इस प्रकार उन्होंने छायावादी युग से लेकर प्रगतिवाद, प्रयोगवाद तथा नयी कविता तक का सफर पूरा करते हुए हिन्दी साहित्य में कई नवीन प्रयोग किए। उनकी रचनाएं हिन्दी साहित्य की अक्षय निधि है।

व्यावहारपरक उद्देश्य
(Behavioural Objectives)

हिन्दी शिक्षण के व्यावहारपरक उद्देश्य और उनका महत्व

भूमिका:- शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सुचारू रूप से सम्पन्न करने के लिए हिन्दी शिक्षण के व्यावहारपरक उद्देश्यों का अर्थ तथा महत्व समझना अति आवश्यक है। कक्षा-कक्ष में जाने से पहले हर अध्यापक को यह समझना आवश्यक है कि वह कक्षा-कक्ष में बच्चों को क्या, क्यों और किस तरह पढ़ाएगा? पढ़ाने के पश्चात् यह जानना भी जरूरी है कि बच्चों को कितना समझ आया है तथा उन्होंने कितना ज्ञान अर्जित किया है। इसके पश्चात इस बात का पता आसानी से लगाया जा सकता है कि बच्चों के व्यवहार में क्या परिवर्तन हुए। अर्थात् उन्होंने प्रदत्त ज्ञान तथा अर्जित ज्ञान को व्यवहार में लाया है या नहीं।

अर्थ:- व्यावहारिक उद्देश्यों से अभिप्राय विद्यार्थियों के व्यवहार में शैक्षिक क्रियाओं के माध्यम से होने वाले अपेक्षित परिवर्तनों से हैं। हिन्दी शिक्षण में व्यावहारपरक उद्देश्यों की प्राप्ति इतनी आसानी से नहीं हो सकती। व्यावहारपरक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए यह आवश्यक होता है कि शिक्षा के द्वारा जो ज्ञान हमने ग्रहण किया है उसे हम व्यवहार में लाएँ तथा व्यावहारिक रूप दें।

Scanned by CamScanner

[illegible] किए हैं:-

"[illegible] शैक्षिक उद्देश्य [illegible] विद्यार्थी द्वारा [illegible] किया जाता है।"

व्यावहारिक उद्देश्यों का वर्गीकरण:- [illegible] शैक्षिक उद्देश्यों को मुख्यतः तीन भागों में बांटा है:-

[illegible] शैक्षिक [illegible]

(1) ज्ञानात्मक पक्ष (Cognitive Domain)

(2) भावात्मक पक्ष (Affective Domain)

(3) क्रियात्मक पक्ष (Psychomotor or Conative Domain)

(1) **ज्ञानात्मक पक्ष:-** ज्ञानात्मक पक्ष से अभिप्राय बौद्धिक तथा मानसिक विकास से है। ज्ञानात्मक उद्देश्यों को छः भागों में बांटा गया है:-

(i) ज्ञान (Knowledge)

(ii) बोध (Understanding)

(iii) प्रयोग (Practical) or Application

(iv) विश्लेषण (Analysis)

(v) संश्लेषण (Synthesis)

(vi) मूल्यांकन (Evaluation)

(i) **ज्ञान:-** ज्ञान से अभिप्राय भाषा, वर्तनी, समास, संधि, शब्द भेद, प्रत्यय, उपसर्ग आदि के ज्ञान से है। इसके साथ-साथ शुद्ध उच्चारण का ज्ञान (हिन्दी भाषा-शिक्षण के सन्दर्भ में) तथा स्वर व्यंजन और विसर्ग आदि के शुद्ध उच्चारण पर बल दिया जाता है।

(ii) **बोध:-** बोध से अभिप्राय उस अर्जित ज्ञान से है जो अच्छी तरह से विद्यार्थियों की समझ में आ गया हो। इस प्रकार जब कोई बात या विषयवस्तु पूरी तरह से समझ में आ जाती हैं तो यह कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों को इस विषयवस्तु का बोध हो गया है। हिन्दी शिक्षण में ये बोध तीन प्रकार से हो सकता है:- अनुवाद के रूप में, व्याख्या के रूप में तथा पठित प्रकरण के स्वयं लेखन के रूप में।

(iii) **प्रयोग:-** [illegible] की कोशिश की जाती है जिससे कि [illegible] सामग्री को अपने भावों की अभिव्यक्ति में प्रयोग कर सकें।

(iv) **विश्लेषण:-** ज्ञान, बोध तथा प्रयोग आदि उद्देश्यों की प्राप्ति के पश्चात पाठ्य वस्तु का विश्लेषण किया जाता है तथा [illegible] सम्बन्ध स्थापित किया जाता है। इसमें तत्वों तथा सम्बन्धों का विश्लेषण प्रमुख है।

(v) **संश्लेषण:-** संश्लेषण के अन्तर्गत तत्वों को जोड़कर तथा पूर्णतया एकत्रित करके एक नई संरचना का गठन किया जाता है। इससे विद्यार्थियों की क्षमताओं का विकास किया जाता है। हिन्दी शिक्षण करते समय व्याकरण शिक्षण में यह उद्देश्य विशेष उपयोगी है।

(vi) **मूल्यांकन:-** यह ज्ञानात्मक पक्ष का अंतिम चरण है। इसमें प्रदत्त ज्ञान का मूलांकन किया जाता है। मूल्यांकन मौखिक तथा लिखित दोनों रूपों में किया जा सकता है। मूल्यांकन के द्वारा यह पता लगाया जा सकता है कि विद्यार्थियों ने कितना ज्ञान अर्जित किया है। शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए ज्ञानात्मक पक्ष का यह अंतिम पहलू बहुत ही आवश्यक है।

(2) **भावात्मक पक्ष:-** भावात्मक उद्देश्यों का सम्बन्ध व्यक्ति के मनोवेगों, भावनाओं तथा रूचियों आदि से होता है। हमारी भावनाएं, रूचियां, रहन-सहन हमारे दैनिक जीवन पर गहरा प्रभाव डालते हैं। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना है। इस सम्बन्ध में शिक्षक का यह कर्त्तव्य है कि वह भावात्मक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए विद्यार्थियों के संवेगों तथा उनकी मनोवृतियों, अभिरूचियों तथा स्थाई व अस्थाई भावों का अधिक-से-अधिक विकास करें। भावात्मक उद्देश्यों का विस्तृत विवरण इस प्रकार से है:-

(i) ग्रहण करना (Receiving)

(ii) अनुक्रिया (Response)

(iii) आकलन (Valuing)

(iv) संगठन (Organising)

(v) चरित्र निर्माण (Characterisation)

(i) **ग्रहण करना:-** शिक्षक द्वारा प्रदत्त ज्ञान को विशेषतया गद्य

Scanned by CamScanner

के सम्बन्ध में विद्यार्थी सभी प्रकार से ध्यान पूर्ण तथा उसमें निहित भावों तथा विचारों को भी आत्मसात कर पाएँ। इसमें छात्रों में इस प्रकार की योग्यता का विकास किया जाता है। छात्रों में भी [illegible] को योग्यता का विकास हो सके ये कविता के भावों को अपने आप ही [illegible] कर जाएँ, इसमें इन्हीं बातों का ध्यान रखा जाता है।

(ii) **अनुक्रिया:-** आलम्बन या ग्रहण करने के पश्चात् अनुक्रिया की बारी आती है। इसके अन्तर्गत विद्यार्थी स्वयं प्रेरित होकर अर्जित ज्ञान पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। बोलकर या लिखित रूप में प्रतिक्रिया के प्रति सहमति प्रकट की जाती है।

(iii) **आकलन:-** आकलन भावात्मक पक्ष का तीसरा चरण है। इसे अनुमूल्यन भी कहा जाता है। भावात्मक पक्ष का यह पहलू विभिन्न कार्य, वस्तुओं के बारे में एक निश्चित धारणा बनाने से सम्बन्ध रखता है। इसके अन्तर्गत अध्यापक विद्यार्थियों में मूल्यों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास कर सकता है।

(iv) **संगठन:-** यहां संगठन से अभिप्राय लोगों के संगठन से नहीं बल्कि मूल्यों के संगठन से है। इसके अन्तर्गत विद्यार्थी मूल्यों को संगठित करके उनमें परस्पर सम्बन्ध स्थापित कर उन्हें व्यावहारिक रूप देने का प्रयास करता है।

(v) **चरित्र निर्माण या स्वाभावीकरण:-** भावात्मक पक्ष के अंतिम चरण में स्वाभावीकरण की भूमिका होती है। जिसके अन्तर्गत चरित्र निर्माण या स्वभाव निर्माण पर बल दिया जाता है। इस चरण तक पहुँचते-पहुँचते विद्यार्थी मूल्यों को ध्यान में रखते हुए कार्य करने लगता है। धीरे-धीरे इसका उसके व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार उसके चरित्र का निर्माण हो जाता है।

(3) **क्रियात्मक पक्ष:-** क्रियात्मक उद्देश्यों का सम्बन्ध क्रियाओं से होता है। इसके अन्तर्गत विद्यार्थियों में भाषायी कौशलों का विकास किया जाता है। सबसे पहले सुनने तथा बोलने की क्रिया पर जोर दिया जाता है और उसके पश्चात् पढ़ने तथा लिखने की क्रियाओं को विकसित किया जाता है।

सिम्पसन महोदय ने क्रियात्मक पक्ष के पांच अंग बताए हैं:-

(i) प्रत्यक्षीकरण (Perception)

Scanned by CamScanner

(ii) मनोस्थिति/ तत्परता (Set)

(iii) निर्देशित प्रतिक्रिया (Guided response)

(iv) कार्य-कौशल / रचनातंत्र (Mechanism)

(v) जटिल व्यवहार (Complex Behaviour)

(i) **प्रत्यक्षीकरण:-** प्रत्यक्षीकरण क्रियात्मक पक्ष या मनोगत्यात्मक पक्ष का पहला चरण है। प्रत्यक्षीकरण एक मानसिक प्रक्रिया है। यह पक्ष सामग्री तथा सम्बन्धों के प्रति जागरूक होने की प्रक्रिया को दर्शाता है। बाहरी वस्तुओं के प्रति रूचि और प्रेरणा के आधार पर जागरूक होने वाली प्रक्रिया प्रत्यक्षीकरण कहलाती है।

(ii) **मनोस्थिति या तत्परता:-** मनोस्थिति किसी कार्य को करने का प्रारम्भिक सांमजस्य है। इसके तीन पक्ष माने जाते है:- भौतिक, संवेगात्मक तथा मानसिक- अर्जित किए हुए ज्ञान को नियमों तथा सूत्रों में बाँधनें में इसका प्रयोग किया जाता है।

(iii) **निर्देशित प्रतिक्रिया:-** निर्देशित प्रतिक्रिया में भाषायी कौशलों को छात्रों में पूर्णतया विकसित करने का प्रयास किया जाता है। हिन्दी शिक्षण में चार भाषायी कौशलों का विकास इसके अन्तर्गत आता है। हिन्दी शिक्षण के चार भाषायी कौशलों में सर्वप्रथम श्रवण कौशल, तत्पश्चात्, वाचन कौशल, पठन कौशल तथा लेखन कौशल का क्रमबद्ध ढंग से विकास किया जाता है। निर्देशित प्रतिक्रिया वह कार्य है जिसमें एक परिपक्व व्यक्ति कम परिपक्व व्यक्ति को निर्देशन देता है।

(iv) **कार्य-कौशल:-** हिन्दी शिक्षण करते समय हिन्दी शिक्षक छात्रों में आत्म विश्वास पैदा कर उन्हें दक्ष बनाने का प्रयास करता है। वह कभी-कभी प्रश्न पूछता है ताकि सभी बच्चे कक्षा-कक्ष में सक्रिय रहें। इसमें बाद अध्यापक द्वारा गृह कार्य भी दिया जाता है।

Scanned by CamScanner

करने में वह पहले बहुत समय लगाता था इन कार्यों को इस स्तर पर पहुँचने के बाद वह बहुत ही अल्प समय में करने में सफल हो जाता है।

व्यावहारिक उद्देश्यों का महत्वः-

(i) शिक्षण विधियों के समायोजन में सहायक।

(ii) मापन एवं मूल्यांकन में सहायक।

(iii) अधिगम प्रक्रिया को क्रियात्मक बनाने में सहायक।

(iv) विद्यार्थियों की कमजोरियों और योग्यताओं को पहचानने में सहायक।

(v) शैक्षिक कार्यक्रम नियोजन में सुविधाजनक।

(vi) सीखने हेतु उपयुक्त परिस्थितियों के निर्माण में सहायक।

(vii) शैक्षिक क्रियाओं को सही दिशा प्रदान करने में सहायक।

(viii) शिक्षण नीतियों के चयन में सहायक।

(ix) बिना रूकावट निरीक्षण में सहायक।

(x) विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने में सहायक।

(xi) अध्यापक क्रियाओं के निर्धारण में सहायक।

(xii) उपयुक्त सामग्री के चयन में सहायक।

(xiii) अधिगम के विभिन्न पहलुओं में स्पष्टता लाने में सहायक।

(xiv) श्रव्य-दृश्य साधनों के चयन में सहायक।

(xv) पाठ्यक्रम की विषय वस्तु एवं संरचना को सार्थक बनाने में सहायक।

Scanned by CamScanner

2

प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य (Objectives of Teaching Hindi at Elementary and Secondary Level)

हम हिन्दी शिक्षण के सामान्य उद्देश्यों और व्यवहारगत उद्देश्यों के साथ-साथ राष्ट्र भाषा के रूप में भी हिन्दी शिक्षण के उद्देश्यों की चर्चा पहले ही विस्तार से कर चुके हैं। अब हमें इस बात पर विचार करना है कि विभिन्न स्तर पर हिन्दी शिक्षण के भिन्न-भिन्न उद्देश्य क्या हों ?

I. प्राथमिक स्तर पर हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य (Objectives of Teaching Hindi at Elementary Level)

(1) छात्र-छात्राओं को अक्षरों का ज्ञान देना और उच्चारण में शुद्धता लाना।

(2) उनको इस योग्य बनाना कि वे अपने स्तर की भाषा में ठीक प्रकार के बातचीत कर सकें।

(3) वे अपने स्तर की शब्दावली को सुनकर और पढ़कर भली भाँति समझ सकें।

(4) छात्र-छात्राओं को सस्वर वाचन के लिये तैयार करना।

(5) छात्र-छात्राओं को इस योग्य बनाना कि अपने स्तर की पाठ्य पुस्तक की विषय-वस्तु का मौन पाठ करके समझ सकें।

(6) उनको इस योग्य बनाना कि वे अपने शब्द भण्डार में वृद्धि करें।

(7) शब्द भण्डार में जिन शब्दों की वृद्धि करें उनका व्यावहारिक जीवन में सक्रिय रूप से प्रयोग भी करें।

(8) छात्र-छात्राओं को प्रवाह पूर्ण रूप से वाचन करने के लिये तैयार करना।

(9) उनको लिपि का ज्ञान कराना और उसका अभ्यास भी कराना।

(10) उनको सुलेख की शिक्षा देना और उसका अभ्यास भी कराना।

(11) छात्र-छात्राओं को शुद्ध लिखने के लिये प्रशिक्षण देना।

(12) उनको श्रुतलेख की शिक्षा देना।

Scanned by CamScanner

(10) उनको कविता विशेष के भाव और कवि के सन्देश को समझने के योग्य बनाना।

(11) छात्र-छात्राओं को शुद्ध और उचित गति से लिखने की योग्यता का विकास करना।

(12) साहित्य की विभिन्न विधाओं से परिचित कराना जैसे कहानी, कविता, निबन्ध, नाटक एकांकी, व्यंग लेख, पत्र आदि।

(13) छात्र-छात्राओं को रचनात्मक कार्यों के लिये प्रेरित करना अर्थात् पाठ्य सहगामी क्रियाएं उपलब्ध करवाना ताकि वे अपनी रुचि अनुसार कविता पाठ, भाषण, अभिनय में भाग ले सकें।

(14) उनको साहित्य की विभिन्न विधाओं की शैलियों से परिचित कराना।

III. माध्यमिक स्तर पर हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य
(Objectives of Teaching Hindi at Secondary Level)

इस स्तर पर पहुंचने तक छात्र-छात्राएं हिन्दी भाषा और उसकी विभिन्न विधाओं के बारे सामान्य जानकारी तो प्राप्त कर लेते हैं परन्तु इनके गहन पहलुओं के बारे में पूर्ण रूप से जानकारी नहीं होती। यही कारण है कि इस स्तर पर हिन्दी भाषा साहित्य के पाठ्यक्रम में कहानियों, एकांकी, साहित्यिक निबन्धों, जीवनियों और विभिन्न रस से सम्बन्धित कविताओं को सम्मिलित किया जाता है। इस स्तर पर हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य कुछ विस्तृत एवं उच्च होते हैं। इस स्तर पर प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार हैं –

I. छात्र-छात्राओं को मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति में निपुण करने का प्रयास करना।

II. उनमें सस्वर वाचन और मौन वाचन के द्वारा गहन विचारों को ग्रहण करने की शक्ति का विकास करना।

III. छात्र-छात्राओं को साहित्य की विभिन्न विधाओं के गहन अध्ययन की शिक्षा देना।

IV. भाषा का दैनिक जीवन में बोलकर और लिखकर व्याकरण के नियमानुसार प्रयोग करना।

V. उनको शब्द भण्डार में वृद्धि के लिये प्रेरित करना और नये शब्दों का सक्रिय रूप से प्रयोग करने के लिये उनका मार्ग दर्शन करना।

VI. उनको इस योग्य बनाना कि वे भाषा का व्यावहारिक विश्लेषण कर सकें।

VII. उनको सौन्दर्यानुभूति और रसानुभूति के विभिन्न पक्षों का ज्ञान देना।

Scanned by CamScanner

VIII. उनको हिन्दी भाषा साहित्य की विभिन्न विधाओं की विभिन्न शैलियों से परिचित कराना।

IX. उनको विभिन्न लेखन शैलियों का ज्ञान देकर उनको अपनी लिखित अभिव्यक्ति के सुधार के लिये प्रेरित करना।

X. उनमें साहित्य से सम्बन्धित चिन्तन और मनन शक्ति का विकास करना।

XI. उनमें साहित्य के माध्यम से सद्वृत्तियों का विकास करना।

XII. उनको चार भाषायी कौशल-सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना में निपुण करना।

XIII. छात्र-छात्राओं में सृजनात्मक (रचनात्मक) प्रवृत्तियों का विकास करना।

अभ्यास के प्रश्न

1. प्राईमरी स्तर के भाषा शिक्षण उद्देश्यों की विस्तार से व्याख्या कीजिए।
2. माध्यमिक स्तर पर भाषा शिक्षण के प्रमुख उद्देश्यों का स्पष्टीकरण कीजिए।
3. प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर मातृभाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण के विभिन्न उद्देश्यों की व्याख्या करें।

Scanned by CamScanner

व्यवहारपरक रूप में व्यक्त करने के लिये यह बताना आवश्यक है कि पूरे अनुदेशन (शिक्षण) प्रक्रिया की समाप्ति के बाद छात्र-छात्राओं के व्यवहार में किस तरह से परिवर्तन आयेंगे। उदाहरण के रूप में हिन्दी शिक्षण के बाद छात्र पढ़े हुए नये दस शब्दों को लिखित रूप से वाक्य में प्रयोग कर सकेंगे इस प्रकार के कथन को व्यवहारपरक उद्देश्यों की श्रेणी में रखा जा सकता है।

व्यवहारपरक उद्देश्यों के तत्व
(Elements of behavioural objectives)

व्यवहारपरक उद्देश्यों के तीन तत्व होते हैं। जो इस प्रकार हैं –

पहले में शिक्षण के परिणामस्वरूप प्रत्याशित (अपेक्षित) व्यवहार (कार्य-कुशलता अभिवृत्ति, नवीन ज्ञान या धारणा) का स्पष्ट रूप में उल्लेख होता है।

दूसरे में किन दिशाओं या सन्दर्भों में व्यवहार परिवर्तन हो सकेगा उसका विवरण किया जाता है।

तीसरे तत्व के अन्तर्गत जिस स्थिति में अभिव्यक्त व्यवहार को मान्य कहा जायेगा, उसके परिणाम (माप दण्ड) का संकेत होगा।

राबर्ट मेगर की पुस्तक 'प्रिपेयरिंग इन्सट्रकशनल आबजैकिटव्स' (Preparing Instructional Objectives) में इस प्रकार के उद्देश्य निर्माण हेतु लाभप्रद और प्रभावपूर्ण अभ्यास प्रस्तुत किये गये हैं। मेगर का कहना है कि 'व्यवहारपरक' उद्देश्यों के निर्माण हेतु तीन प्रकार के प्रश्नों का पूछना आवश्यक है। ये प्रश्न निम्नलिखित हैं :–

I. जब छात्र-छात्राएं किसी ज्ञान या कुशलता को अर्जित कर लेंगे तो उनमें किस प्रकार का परिवर्तन होगा।

II. उनका व्यवहार परिवर्तन किन दिशाओं में होगा।

III. उचित निष्पादन (Appropriate performance) के लिये क्या स्तर (पैमाना) मान्य होगा।

यह कहना हमारे लिये उचित होगा कि व्यवहारपरक उद्देश्यों के प्रतिपादन के लिये उपर्युक्त ये तीन प्रश्न सहायक हो सकते हैं ?

व्यवहारपरक उद्देश्यों के नमूने
(Examples of behavioural objectives)

निम्नलिखित व्यवहारपरक उद्देश्य कथनों में पूर्व वर्णित (कथित) तत्वों की पहचान कीजिए और यह बतायें कि इनमें से कौन सा कथन पूर्णतः है और कौन सा कथन अंशतः व्यवहारपरक की कोटि में रखा जा सकता है :–

Scanned by CamScanner

1. अभिक्रम (शिक्षण) पूरा होने के बाद छात्र ... विशेषण शब्दों की पहचान सकेंगे।
2. अभिक्रम का अध्ययन कर लेने पर विद्यार्थी प्रदत्त वाक्य सूची में से विशेषण को लगभग 3 मिनट की अवधि में रेखांकित कर लेगा।
3. अभिक्रम की समाप्ति पर विद्यार्थी पूरी कविता पढ़कर उसका सरल अनुवाद कर लेगा।
4. कविता का पाठ कर लेने पर विद्यार्थी उसमें तीन पदों की व्याख्या अपनी भाषा में कर लेगा।
5. कविता का पाठ कर लेने के बाद विद्यार्थी बिना सहायता के 5 मिनट के अन्दर उसकी आवृत्ति कर लेगा।
6. गद्य को पढ़ लेने के बाद विद्यार्थी अपनी समझ के आधार पर महत्त्वपूर्ण सूचनाओं की आवृत्ति कर सकेगा।
7. गद्य पाठ की समाप्ति पर विद्यार्थी पाठ में दिये गये अनुच्छेदों की बिना गलती के वाचन कर सकेगा।

ऊपरलिखित उद्देश्य कथनों को सावधानी एवं ध्यान से पढ़ने के बाद ज्ञात होगा कि इनमें से कुछ अंशत: व्यवहारपरक हैं जो इस प्रकार हैं – 1, 3, 6 और 7 और शेष कथन अर्थात 2, 4, 5 पूर्णत: व्यवहारपरक कहे जा सकते हैं क्योंकि इनमें तीनों तत्व विद्यमान हैं।

व्यवहारपरक उद्देश्यों की विशेषताएं
(Characteristics of behavioural objectives)

जैसे कि हम पहले ही इस बात की चर्चा कर चुके हैं कि सामान्य उद्देश्य और व्यवहारपरक उद्देश्य में अन्तर है। व्यवहारपरक उद्देश्यों में सीखने की दृष्टि से व्यवहार परिवर्तन का उल्लेख किया जाता है, जबकि सामान्य उद्देश्यों में ऐसा कुछ नहीं होता।

व्यवहारपरक उद्देश्यों की विशेषताएं निम्नलिखित हैं –

I. व्यवहारपरक उद्देश्यों को ऐसे कथन के रूप में प्रस्तुत किया जाता है जिनमें धारणा की दृष्टि से स्पष्टता हो।

II. व्यवहारपरक उद्देश्यों द्वारा सन्दर्भ सम्बन्धित व्यवहार का स्वरूप अवलोकनीय और मापनीय होता है।

III. व्यवहारपरक उद्देश्यों के माध्यम से छात्र, शिक्षक और परीक्षक तीनों को लाभ होता है।

Scanned by CamScanner

(13) कविताओं अथवा बालगीतों को भावानुकूल वाचन करने के लिये तैयार करना।

(14) उनको इस योग्य बनाना कि वे क्रमबद्धता से अपनी बात को कह सकें।

(15) उनको मौखिक अभिव्यक्ति हेतु बोलने के लिये सुअवसर प्रदान करना।

(16) उनको दैनिक जीवन के अनुभवों को बोलकर और लिखकर अभिव्यक्त करने के लिये प्रेरित करना।

(17) उनको स्वतन्त्र अध्ययन के लिये प्रेरित करना।

(18) छात्र-छात्राओं की भाषा सम्बन्धी रुचियों को विकसित करने के लिये अवसर प्रदान करना।

II. मिडल स्तर पर हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य
(Objectives of Teaching Hindi at Middle Level)

मिडल स्तर पर हिन्दी शिक्षण के निम्न उद्देश्य हैं–

(1) छात्र-छात्राओं के शब्द भण्डार एवं सूक्ति भण्डार में वृद्धि करना।

(2) उनको पढ़ी हुई सूक्तियों, मुहावरों और लोकोक्तियों को वाक्यों में प्रयोग करने के लिये प्रेरित करना ताकि वे अपनी मौखिक अभिव्यक्ति को प्रभावपूर्ण बना सकें।

(3) उनको इस योग्य बनाना कि वे अपने शब्द भण्डार का सक्रिय रूप से प्रयोग कर सकें।

(4) उनको भाषा का शुद्ध ज्ञान देने हेतु व्याकरण के नियमों को जानने के लिये प्रेरित करना।

(5) उनको विराम, पूर्ण विराम और आरोह-अवरोह का ध्यान रखते हुए सस्वर वाचन की शिक्षा देना।

(6) उनको मौनवाचन के माध्यम से गहन अध्ययन करने के लिये प्रेरित करना।

(7) छात्र-छात्राओं में स्वाध्याय की प्रवृत्ति का विकास करने के लिये पाठ्य पुस्तकों के अतिरिक्त स्कूल के पुस्तकालय अन्य पुस्तकों को पढ़ने के लिये मार्गदर्शन करना।

(8) छात्र-छात्राओं को स्वाध्याय का प्रशिक्षण देते हुए उनकी साहित्य के प्रति रूचि का विकास करना।

(9) उनको सौन्दर्यानुभूति का बोध कराना और कविताओं को पढ़कर रसानुभूति का आभास कराना।

Scanned by CamScanner

ब्लूम द्वारा निर्धारित अनुदेशनात्मक उद्देश्य

प्रोफेसर ब्लूम द्वारा निर्धारित मातृ भाषा हिन्दी शिक्षण के उद्देश्यों से पहले इनके लिये व्यवहारपरक उद्देश्यों और उनका सामान्य उद्देश्यों से क्या अन्तर है, इस बात का जानना आवश्यक है।

व्यवहारपरक उद्देश्य

अधिगम के उद्देश्यों की परिभाषा देने हेतु व्यवहारपरक या संक्रियात्मक तरीका अपनाया जाता है। यहां ध्यान देने की बात यह है कि व्यवहारपरक (behavioural) या संक्रियात्मक (operational) शब्द समानार्थी हैं। इसलिये इनका प्रयोग एक दूसरे के लिये किया जा सकता है। उद्देश्यों के सन्दर्भ में 'व्यवहार परक' से तात्पर्य है अनुदेशन के बाद विद्यार्थी में प्रगट होने वाले व्यवहार को वस्तुनिष्ठ एवं स्पष्ट ढंग से व्यक्त करना। प्रायः ऐसा होता है कि शिक्षण एवं अनुदेशन की प्रक्रिया में उद्देश्यों का निर्माण सामान्य रूप से ही करते हैं। परन्तु व्यवहारपरक उद्देश्यों की रचना को अधिक महत्त्वपूर्ण और उपयोगिता की दृष्टि से अधिक सकारात्मक माना जाता है।

सामान्य उद्देश्य और व्यावहारपरक उद्देश्य में अन्तर
(Difference between general and behavioural objective)

सामान्य उद्देश्यों और व्यवहारपरक उद्देश्यों में मूल रूप में यह अन्तर होता है कि सामान्य उद्देश्यों के लिये व्यापक पदों का प्रयोग होता है और व्यवहारपरक उद्देश्यों को व्यक्त करने के लिये विशेष एवं वस्तुनिष्ठ पद प्रयोग में लाते हैं। इसके अतिरिक्त इनको 'सामान्य रूप' में (मोटे तौर पर) निर्धारित करते हैं जिससे उनके अनुकूल आयोजित होने वाली शिक्षण प्रक्रियाओं के बारे में स्पष्ट मार्ग दर्शन उपलब्ध नहीं होता। इसके विपरीत हम देखते हैं कि व्यवहारपरक उद्देश्यों द्वारा विद्यार्थी में प्रत्याशित (अपेक्षित) अधिगम व्यवहार उसकी परिस्थितिगत विशेषता एवं उसके परिमाणों का उल्लेख होता है। शिक्षण या अनुदेशन के माध्यम से घटित व्यवहार परिवर्तन फलस्वरूप छात्र किस प्रकार की क्रियाएं करने में सफल हो सकता है, इस प्रकार की जानकारी हमें व्यवहारपरक उद्देश्यों के अध्ययन से हो सकती है और इस की पुष्टि व्यवहार क्रियाशीलता से सम्भव है।

उदाहरणतया दैनिक जीवन में बातचीत करते हुए आप यदि हिन्दी पढ़ाने वाले शिक्षक से यह पूछ लें कि हिन्दी विषय की शिक्षा के क्या उद्देश्य हैं तो वो आप से सामान्य उद्देश्य की ही चर्चा करेगा।

जैसे हिन्दी शिक्षण के माध्यम से ज्ञानोपार्जन की योग्यता का विकास करना, साहित्य की विभिन्न विधाओं का ज्ञान कराना, राष्ट्र की सभ्यता और संस्कृति को सुरक्षित रखना, सौन्दर्यानुभूति का विकास करना, छात्र-छात्राओं में सद्वृत्तियों का विकास करना आदि। ये सभी उद्देश्य हिन्दी शिक्षण के सामान्य उद्देश्य के अन्तर्गत आयेंगे। इन उद्देश्यों को

Scanned by CamScanner